P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-I*September-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा और साहित्य

अनीता रानी कन्नौजिया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामपुर

सारांश

नारी सृष्टि का आधार है वह नर की सहधर्मिणी है। अपने सहज स्वभाविक गुणों में ही उसका नारीत्व है। उसके दिव्य गुणों के कारण ही हमारे ग्रन्थो में ''यंत्र–नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता'' कहकर उसका सम्मान किया गया है। इतिहास गवाह है कि जिन समाजों में महिलाओं को बराबरी अथवा उच्चतर दर्जा प्राप्त है वे विकास व प्रगति की दौड़ में अपने समकालीनों से मीलों आगे रहे हैं। नेपोलियन–बोनापार्ट जैसे सेनानायक ने महिलाओं को शिशु व समाज दोनों की आनुशंगिक पाठशाला स्वीकारते हुए एक महान राष्ट्र के निर्माण में उनकी उपादेयता यूं ही अकारण स्वीकार नहीं की थी, जो शक्ति नारी के दो शब्दों में है वो हुजूम के नारों में नहीं।

किसी भी अच्दे समाज की पहचान उस समाज की महिलाओं से मानी गई है। एक अच्छी माँ ही अच्छे गुणों का विकास कर सकती है और देश को अच्छे नागरिक दे सकती है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि अच्छे सपूतों और नागरिकों के लिये अच्छी मातायें होनी अति आवश्यक है। पूरी दुनिया में समाज में यद्यपि महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं रही लेकिन वर्तमान में इस स्थिति में भारी सुधार देखने को मिल रहा है।

आज यदि हम अपने बदलते परिवेश में समाज की दशा मे दृष्टिपात करते हैं तो बहुसंख्या में महिलाओं के प्रति पनप रही हिंसा में लगातार वृद्धि को पाते हैं। अगर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाये तो स्त्री मुक्ति का प्रश्न पूरे समाज से जुड़ा है। साहित्य इसी सत्य को स्वीकार करता है।

मुख्य शब्द : महिला हिंसा, सशक्तिकरण, अस्मिता, साहित्य।

प्रस्तावना

नारी सृष्टि का आधार है वह नर की सहधर्मिणी है। अपने सहज स्वभाविक गुणों में ही उसका नारीत्व है। उसके दिव्य गुणों के कारण ही हमारे ग्रन्थो में ''यंत्र–नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता'' कहकर उसका सम्मान किया गया है। इतिहास गवाह है कि जिन समाजों में महिलाओं को बराबरी अथवा उच्चतर दर्जा प्राप्त है वे विकास व प्रगति की दौड़ में अपने समकालीनों से मीलों आगे रहे हैं। नेपोलियन–बोनापार्ट जैसे सेनानायक ने महिलाओं को शिशु व समाज दोनों की आनुशंगिक पाठशाला स्वीकारते हुए एक महान राष्ट्र के निर्माण में उनकी उपादेयता यूं ही अकारण स्वीकार नहीं की थी, जो शक्ति नारी के दो शब्दों में है वो हुजूम के नारों में नहीं।

किसी भी अच्छे समाज की पहचान उस समाज की महिलाओं से मानी गई है। एक अच्छी माँ ही अच्दे गुणों का विकास कर सकती है और देश को अच्छे नागरिक दे सकती है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि अच्छे सपूतों और नागरिकों के लिये अच्छी मातायें होनी अति आवश्यक है। पूरी दुनिया में समाज में यद्यपि महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं रही लेकिन वर्तमान में इस स्थिति में भारी सुधार देखने को मिल रहा है।

भारत की संस्कृति में प्राचीन काल से ही महिलाओं को सम्मान स्वरूप 'देवियों' का दर्जा दिया जाता रहा है, क्योंकि उनके अन्तर्निहित गुणों में सहनशीलता, करूणा, दया, प्रेम आवश्यकता होने पर अदम्य साहस इत्यादि की प्रधानता रही है। इसका एक कारण हमारा सरराहनीय सामाजिक ढाँचा और मूल्यप्रद शिक्षा भी था। जिसमें बढ़ते कार्य के बोझ, महत्वाकांक्षाओं, सामाजिक परिवर्तन तथा शिक्षा पद्धति में होते सामाजिक बदलाव के कारण विकसित हो रही है।

हिंसा की यदि हम बात करते हैं तो यह विद्वत्जनों के अनुसार, शारीरिक, मानसिक, वाचिक, किसी भी रूप में परिलक्षित हो सकती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने राष्ट्र के नैतिक और सामाजिक विकास के लिये सदैव अहिंसा के पालन का मार्ग दिखलाया। इनके अतिरिक्त जगद्गुरू शंकराचार्य, गौतम बुद्ध, महर्षि पतंजली, जैन मुनि आचार्य श्री महाप्रज्ञ इत्यादि ने भी किसी भी कारण से

किसी भी जीव के प्रति हिंसा का व्यवहार न करने की प्रेरणा अपने जीवन से दी है।

यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि वैदिक युग समाज में महिला सम्मान व सशक्तीकरण का स्वर्ण युग था। याज्ञवलक्य जैसे महाविद्वान के पांडित्य के दंभ को शास्त्रार्थ की चुनौती देकर चूर करने वाली गार्गी सहित मैत्रेयी, घोषा, अपाला आदि विदुषियों की लम्बी श्रृंखला तत्कालीन युग में महिलाओं की समाज में गौरवशाली स्थिति बताने के लिये पर्याप्त है। कदाचित महिला सम्मान के पराभव का आरम्भ उत्तर स्मृतिकालीन युग से माना जा सकता है, जब महिलाओं के जीवन का त्रिविमीय विभाजन कर उसे क्रमशः पिता–पति व पुत्र के अधीन कर दिया गया महिला सम्मान स्वातंत्रय समाप्ति का यह मात्र प्रथम सोपान था। मध्ययुग में आते–आते महिलाओं की समाज में स्थिति व सम्मान उत्तरोत्तर पतन से भयावह स्थिति में पहुँच गया। वैदिक युग की स्वतंत्र, स्वछन्द व उन्मुक्त नारी गृहकार्य में कैद होकर रह गई, बची कसर 'ढोल गंवार–नारी' जैसे विशेषणों का प्रोग करते हुए तुलसी जैसे मनस्वियों ने पूरी कर दी। इन सबके बावजूद दासता के अनंत तिमिराकाश में रजिया सुल्तान, दुर्गावती, जीजाबाई आदि कुछ रश्मियां अल्पकाल के लिए चमकी अवश्य किन्तु वे गिनती भर की ही थीं।

मध्ययुग के अवसान के साथ ही नवयुग का आगमन ब्रिटिश दासता के सौगात तो अवश्य लेकर आया, किन्तु यूरोपीय पुर्नजागरण के साकारात्मक प्रभावों से भारतीय उपमहाद्वीप भी अप्रभावित न रह सका महिलाओं को समाज में उनका खोया हुआ सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिये राजाराममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर आदि ने मिलकर सफलतापूर्वक गम्भीर प्रयास किये। इसी प्रकार महात्मा गाँधी ने हिन्द स्वराज में लिखा 'जब तक आधी मानवता की आंखों में आंसू हैं, मानवतापूर्ण नहीं कही जा सकती'' इसी के साथ स्वतन्त्रता व समानता पर आधारित लोकतांत्रिक मूल्यों की बयार ने भी महिलाओं को घर की दहलीज से निकालकर विश्व पटल पर स्थापित कर दिया।

साहित्यक स्तर पर छायावादी युग के जयशंकर प्रसाद ने उद्घोषित किया

नारी तुम केवल श्रद्धा हो...
जीवन में सुन्दर समतल में।

प्रेमचंद ने अपने सामाजिक यथार्थ उपन्यास गोदान में नारी अस्मिता की रक्षा तथा अन्तर्जातीय विवाह द्वारा नारी सशक्तिकरण की प्रक्रिया को विकसिक करने का सफल प्रयास किया है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपने उपन्यासों में सशक्त नारियों के साथ मैत्रेयी पुष्पा ने हिन्दी कथा साहित्य में प्रवेश किया और नारी सशक्तिकरण की प्रणेता बनकर उभरी। मैत्रेयी पुष्पा ने जिस अस्तित्व सजग स्त्री को अपने उपन्यासों में नायकत्व दिया, वह दृढ़, निश्चयी, साहसी, आत्मविश्वास व हवा का रूख बदलने की क्षमता रखती है। इनके उपन्यासों की नारियाँ आर्थिक सामाजिक प्रश्नों के प्रति गम्भीर हैं।

उद्देश्य

वर्तमान समाज में नारी आज शोषण का हिस्सा मात्र बनकर नहीं रह गयी है नारी ने अपनी योग्यता का परिचय समय–समय पर दिया है नारीका दूसरा नाम ही संघर्षी है अर्थात नारी के बराबर सहनशीलता किसी अन्य प्राणी में नहीं है आज नारियां वास्तविक रूप से हर क्षेत्र में पुरूषों के समकक्ष उपस्थित हुई हैं। आज की नारी में शक्ति की कोई कमी नहीं है जरूरत है सिर्फ उसे अपनी शक्ति को अहसास कराने की और सही दिशा में मोड़ने की।

चूर हुए स्वप्न सब नारी का जीवन मुरझाया,
ओ मेरे युग के प्रहरी, इस कलंक का करो सफाया।।

आज संकट उन स्त्रियों पर भी है जिनके नैतिक मूल्य हैं, समाज में आदर सम्मान है, छवि अच्छी है, पुरूष वर्ग या समाज उनकी छवि भी दूशित करने से नहीं चूकते। इसमें बराबर की भागीदार महिलाएं भी हैं जो उन्हें हमेशा स्वयं से नीचा देखना चाहती हैं। इस तरह इस वर्ग की महिला अच्छा होने के बावजूद इस बात के लिये चिंतित है कि उसका सम्मान कैसे सुरक्षित बचे। चुनौती निश्चित रूप से इसी वर्ग की स्त्रियों के लिये हैं उन स्त्रियों के लिये चिन्ता का विषय वर्तमान में नहीं है जिनकी छवि दूषित है, या जो खुद समाज को दूषित कर रही हैं। वर्तमान में संघर्ष निश्चित रूप से एक अच्छे चरित्रवान महिला के लिये है जो निरन्तर जूझ रही है ये महिला चाहे शिक्षित वर्ग की हो अशिक्षित वर्ग की, दोनों की वर्गों में नैतिक मूल्यों वाली व चरित्रवाल महिलाएँ हैं।

समय और परिवेश के साथ धीरे–धीरे पुरूष प्रधान समाज ने अपने अनुकूल धर्म और समाज को व्याख्यायित करते हुए नारी को नियम और कानून की कारा में कैद कर पंगु बना दिया। परिणामस्वरूप स्वच्छन्त पग से कदम से कदम मिलाकर परूष के साथ चलती हुए नारी जीवन यात्रा में निरन्तर पीछे होती चली गयी। यहीं से नारी हिंसा, शोषण एवं समस्या का प्रारम्भ होता है। सामजिक और धार्मिक मूल्य समय सापेक्ष मानको के अनुरूप निर्धारित किये जाते हैं किन्तु मानवीय मूल्य चिरन्तन एवं शाश्वत होते हैं। बलि प्रथा, सती प्रथा, जौहर प्रथा, बाल विवाह, बहुपत्नी प्रथा, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, देवदासी प्रथा आदि तद्युगीन सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं, कुरीतियों और अन्धविश्वासों से अधिक कुछ नहीं था। यही सामाजिक और धार्मिक मूल्य जब आधुनिक प्रगतिवादी चश्मे से देखते हुए विज्ञान के तर्क की कसौटी पर कसकर मानीवीय मूल्य के खरे तराजू पर तौले जाने लगे तो उनकी निरर्थकता स्वतः सिद्ध हो गयी। आधी आबादी को न्याय दिलाने के लिए बड़े–बड़े धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन चलाये जाने लगे। सिद्ध आन्दोलन, सन्त आन्दोलन, समाज सुधार आन्दोलन से आगे बढ़कर संवैधानिक नियम और कानून के माध्यम से नारी को विविध प्रकार की हिंसा एवं शोषण से मुक्ति दिलाने सद्प्रयास किया जाने लगा। किन्तु अब सामाजिक और धार्मिक विकृति ने मनुष्य की मानसिक विकृति का रूप ले लिया है। अब हिंसा सामाजिक परम्परा और व्यवस्था न होकर व्यक्ति की स्वार्थलोलुपता, कुण्ठा,

मानसिक विकृति, विद्वेष व हृदयहीनता का प्रतिफल प्रतीत होती है। भ्रूण हत्या, दहेज के नाम पर जलाना, यौन शोषण, बलात्कार जैसी जघन्य हिंसा वर्तमान मानवीय मूल्यों के ह्रास, व्यक्तिवादी कुण्ठा, नैतिकता का पतन, स्वार्थवादी प्रवृत्ति आदि की ही देन है। हिन्दी साहित्य में नारी हिंसा–समस्या एवं समाधानः– हिन्दी साहित्य में कवियों और लेखकों ने समय–समय पर उक्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सिद्धों ने नारी के प्रति एकनिष्ठा प्रेम को महत्व प्रदान करते हुए उसे साधना का अभिन्न अंग स्वीकार किया है। सन्त कबीर नारी को पतिव्रत धर्म पालन कर विषुद्ध प्रेम का सन्देश देते हैं और मां को परमात्मास्वरूप बताते हैं।

अपने उपन्यासों में स्त्री उत्पीड़न के विविध पहलुओं को बड़े ही संवेदनशीलता व विश्वसनीयता के साथ प्रस्तुत करती है। मैत्रयी की स्त्री अस्तित्व सजग है। चाक की सारंग, अल्मा कबूतरी की आत्मा, विजन की डॉ0 नेहा, त्रिया हठ की स्मिता ये सभी समाज में अपनी सशक्त पहचान बनाने हेतु शिक्षा और उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं।

मैत्रेयी के उपन्यासों की स्त्रियाँ विद्रोह का बिगुल बजाकर युद्ध की मुद्रा में दिखती है। चाक में 'सारंग' पति के अनुचित निर्णय व मारपीट के प्रत्युत्तर स्वरूप बन्दूक चलाने से भी परहेज नहीं करती। अगनपाखी की भुवन जेठ द्वारा मृत घोषित कर सम्पत्ति हड़पने की योजना को असफल करने के लिए कचहरी में उज्रदारी दाखिल कर देती है।

मैत्रेयी की स्त्रियां अपने राजनैतिक अधिकारों के प्रति भी सजग हैं। चाक की सरंग पति के रोकने पर भी प्रधान पद के लिए पर्चा भर आती है। इदन्नमम् की मन्दा स्वार्थी नेताओं को वोट न देने की अपील करती है। अल्मा कबूतरी की अल्मा भी श्रीराम शास्त्री को सीढ़ी बनाकर राजनीति में भी प्रवेश करती है।

मैत्रेयी पुष्पा किसी सशक्तिकरण का समर्थन नहीं करती है फिर भी उनके उपन्यासों की स्त्रियां सशक्त हैं क्योंकि व जातिवाद, कुप्रथाओं, स्त्री शोषण का विरोध कर रहीं है, और सारे विरोधों के बावजूद राजनीति में भी अपनी पहचान बना रही है।

प्रेमचन्द कृत गोदान उपन्यास हिन्दी उपन्यास साहित्य में सामाजिक यर्थात पर आधारित अन्यतम उपन्यास है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने सामाजिक विषमता, राजनैतिक एकाग्रता और धार्मिक संकीर्णता का यथार्तपरक वर्णन किया है ब्रिटिश शासनकाल में भारत की शिक्षा, भाषा, संस्कृति और अर्थव्यवस्था सभी ब्रिटिश शासकों की शोषणकारी नीति से प्रभावित रहे। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने शिक्षा, साहित्य, धर्म, दर्शन और अर्थतंत्र को पाश्चात्य जीवनमूल्यों के सन्दर्भ में व्यस्थापन की प्रक्रिया से सम्बद्ध दिखाया है। ब्रिटिश शासक और प्रशासक और इनके प्रतिनिधि योजनाबद्ध पद्धति से भारत के निर्धन, निरक्षर और नितिवादी लोगों का शोषण का शिकार हुई है। जमींदार, महाजन, पुलिस प्रशासन और लेखपाल सभी एकजुट होकर भारत के किसानों, मजदूरों और महिलाओं का आर्थिक, शारीरिक, मानसिक और नैतिक शोषण करते हैं। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े प्रो0 मेहता, चिकित्सा क्षेत्र से जुड़ी मिस मालती और पत्रकारिता क्षेत्र से जुड़े ओमकारनाथ अपनी जीवनशैली और कार्यशैली में विषमतावादी दिखायी देते हैं। सामाजिक क्रान्ति अकेला बुद्धिजीवी वर्ग नहीं कर सकता। इसके प्रेमचन्द सर्वस्पर्शी उपन्यासकार हैं। वे निरक्षर, निर्धन और नियतिवादी सामाजिक वर्ग को लोकजागरण द्वारा संगठित करके लोकसंघर्ष के लिये प्रेरित और प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

महिलाओं के प्रति हिंसा को समाप्त करने हेतु जहां सामाजिक, नैतिक एवं वैचारिक ढांचे में बदलाव की आवश्यकता है, वहीं सरकार प्रशासन तथा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा उक्त विषय पर जागरूकता फैलाने और न्यायपालिका द्वारा दोषों के विरूद्ध तुरन्त कार्यवाही करना भी परम आवश्यक है।

इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द नारी को समाज की आधारशीला मानते हैं। नारी का शोषण राष्ट्र का अपमान है। नारी अस्मिता की रक्षा राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्रीय गरिमा की बोधक है। नारी स्वावलम्बन और नारी स्वाभिमान ही देश की सच्ची स्वाधीनता है।

यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि महिला अत्याचारों का निदान मात्र यौन, शुचिता जैसे परम्परागत पित्रसत्तात्मक दृष्टिकोण से कदापि नहीं किया जा सकता। इसके लिये स्त्री विमर्श व समस्या का नारीवादी विश्लेषण भी नितान्त आवश्यकता है तथा महिलाओं को सम्मानजनक स्थान दिलाने के उद्देश्य से लोक सभा में विगत दिनों पेश कामकाजी महिलाओं विषयक यौन उत्पीड़न निरोधक विधेयक में भी सुधार अपेक्षित है।

मैत्रेयी पुष्पा किसी सशक्तिकरण का समर्थन नहीं करती है, फिर भी उनके उपन्यासों की स्त्रियां सशक्त हैं, क्योंकि वे जातिवाद, कुप्रथाओं, स्त्री शोषण का विरोध कर रही हैं और सारे विरोधों के बावजूद राजनीति में भी अपनी पहचान बना रही हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि साहित्य के क्षेत्र में महिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है अगर हम यह कहें कि नारी के बिना साहित्य की संकल्पना करना भी व्यर्थ है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि स्वामी विवेकानन्द ने भी ठीक ही कहा है ''स्त्रियों की दशा में सुधार न होने तक विश्व का कल्याण उसी प्रकार असम्भव है, जिस प्रकार पक्षी का एक पंख से उड़ना''।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उत्तरी भारत की संत परम्परा, आर्चायपरशुराम चतुर्वेदी, प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. कबीर की विचारधारा–गोविन्द त्रिगुणायत।
3. नारी उत्पीड़न के नये रूप, सरोज अग्रवाल क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली।
4. हिन्दी उपन्यास 1950 के बाद, निर्मला जैन।
5. हिन्दी उपन्यास युग चेतना और पाठकीय संवेदन, मुकुन्द द्विवेदी।
6. हिन्दी कहानी में नारियों की पारिवारिक समस्याएं, वनमाला चौधरी।

7. प्रेमचंद और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, दिल्ली।
9. प्रतिनिधि कहानिधं, शिवदान सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. स्वातंत्रोत्तर कथा लेखिकाएं, उर्मिला गुप्ता– राधा कष्ष्ण प्रकाशन।
11. समयामत्रिसक हिन्दी साहित्य उपलब्धियां–मन्मनाथ गुप्ता, दिल्ली।
12. टाइम्स ऑफ इण्डिया, प्रतियोगिता दर्पण, हंस पत्रिका, समकालीन साहित्य पत्रिका।